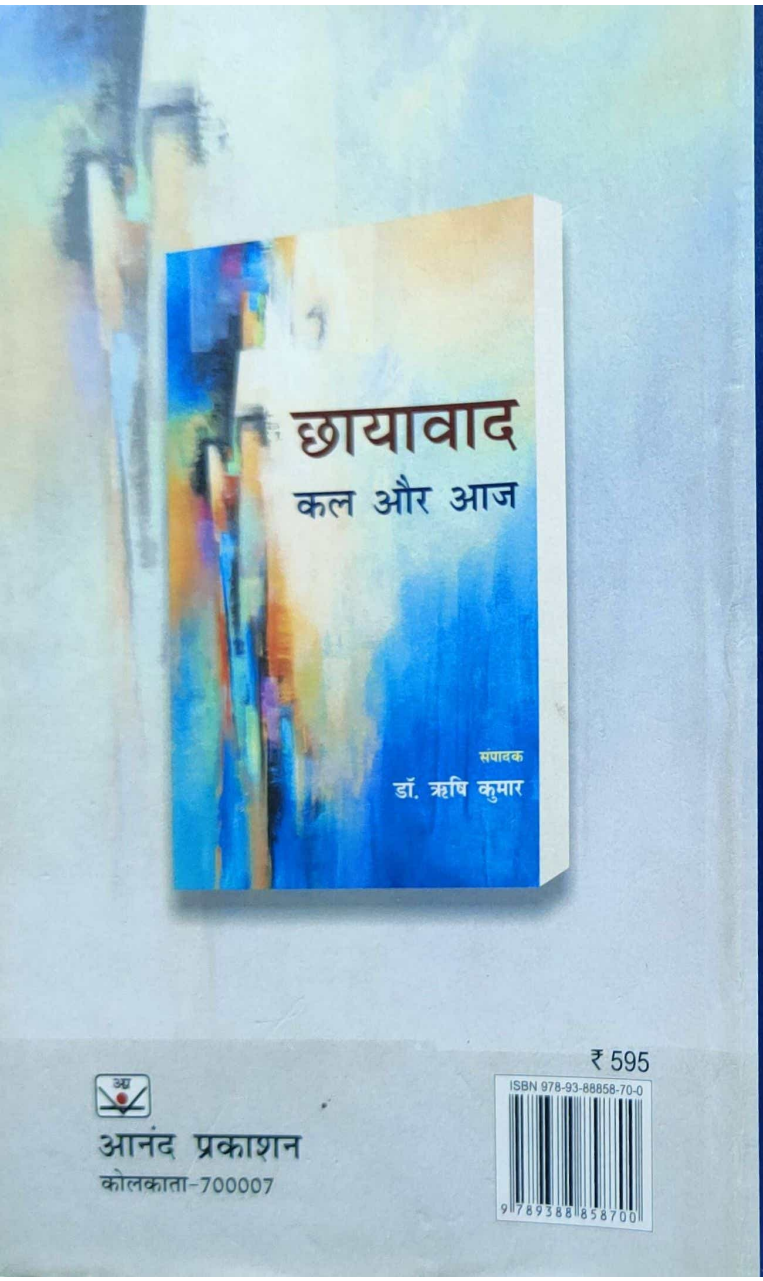

₹ 595

ISBN 978-93-88858-70-0

आनंद प्रकाशन
कोलकाता-700007

छायावाद : कल और आज

संपादक : डॉ. ऋषि कुमार

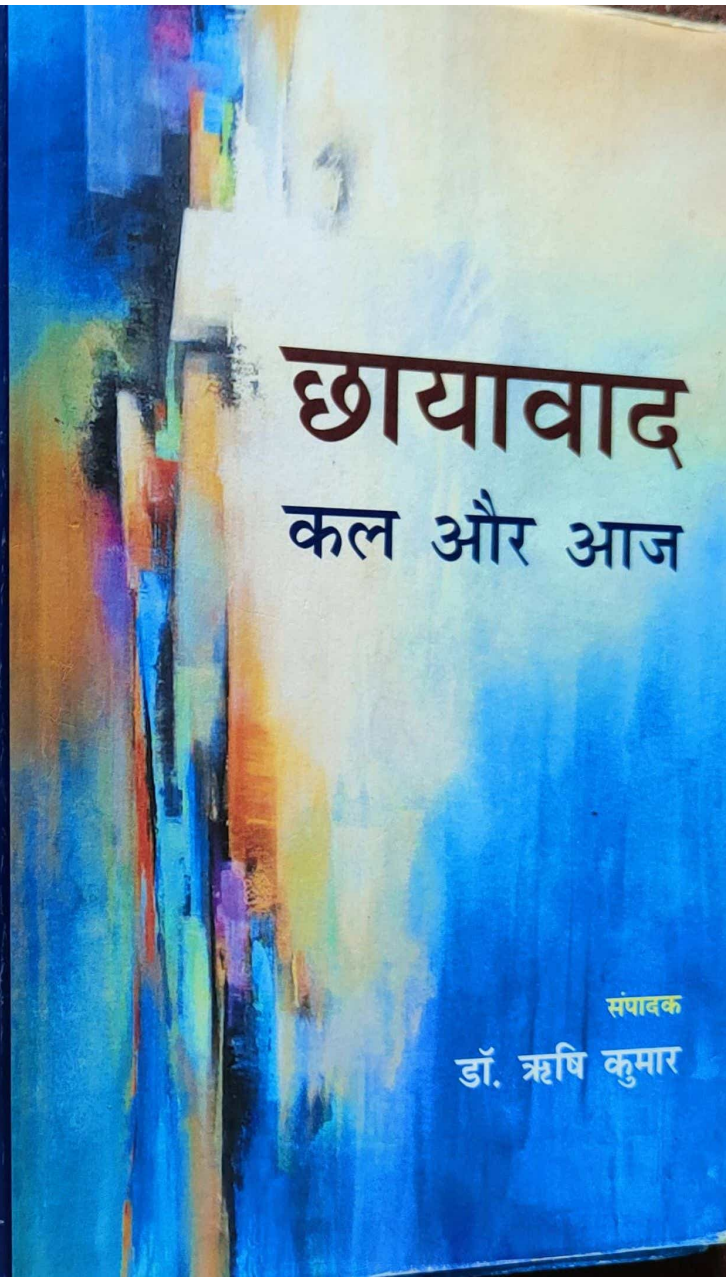

© डॉ. ऋषि कुमार

प्रकाशक
आनन्द प्रकाशन
176/178, रवीन्द्र सारणी
कोलकाता - 700007

ISBN : 978-93-88858-70-0

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : 595.00

मुद्रक :
रुचि प्रिंटर्स
कोलकाता - 7

Chhayavad : Kal Aur Aaj
Ed. by Rishi Kumar
Price : 595.00

छायावादी काव्य में स्त्री

सोनी साव

हिन्दी साहित्य में छायावाद का विशिष्ट महत्व रहा है। छायावाद अपने विशेषताओं में विशालता लिये हुए है। छायावाद का उदय प्राचीन मान्यताओं के खंडन स्वरूप होता है। इस काल ने मानव जीवन के अनेक पक्षों का चित्रण किया है। 'नन्ददुलारे वाजपेयी' के शब्दों में "मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।"[1] छायावाद द्विवेदी युग के बाद आता है। द्विवेदी युग काव्य के रूप में नयापन लाता है वहीं छायावाद काव्य के विषय में नवीनता प्रकट करती है। सन् 1918 ई. से सन् 1936 ई. के बीच बहुत सारे देश व्यापी आन्दोलन हुए थे जो राजनीतिक रूप से देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना को उत्पन्न कर रहे थे, वहीं दूसरी और छायावादी कवियों ने सामाजिक जड़ता विशेषकर समाज में नारी के अस्तित्व और उनके संघर्षों को दिखाया है। 'जयशंकर प्रसाद', 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला', 'सुमित्रानंदन पंत' और 'महादेवी वर्मा' की कविताओं में उस रुढ़िवादिता को खत्म करने का प्रयास किया जिसमें नारी को समाज में हीन समझा जाता था। छायावाद अपने कलेवर में नवीनता लिये हुए था। स्वाधीनता आन्दोलन, राष्ट्रीय जागरण, प्रकृति-चित्रण, शैलीगत प्रवृत्तियाँ, रहस्य भावना, आत्माभिव्यंजन तथा नारी विषयक दृष्टिकोण इस काल की प्रमुख विशेषता रही है।

आदिकाल, भक्तिकाल में नारी गौण रूप में ही रही। रीतिकाल में नारी का स्थान भोग्या से ऊपर नहीं उठ पाया। भारतेन्दु तथा द्विवेदी युग आते-आते नारी की स्थिति में सुधार हुआ। नारी की स्वतंत्रता तथा उसके अस्तित्व की रक्षा छायावाद में हुई। स्त्री प्रारम्भ से समाज में अहम भूमिका निभाते हुए भी गौण पात्र के रूप में तथा भोग विलास की वस्तु बनकर रह गयी थी। छायावादी कवियों ने स्त्री को समाज में पहचान दिलाई। छायावाद में नारी के सूक्ष्म सौन्दर्य का चित्रण किया

11. डॉ. शशि कुमार शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, वर्द्धमान विश्वविद्यालय, वर्द्धमान-713104 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 08509580494
12. रीता चौधरी, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, कोच बिहार पंचानन वर्मा विश्वविद्यालय, कोच बिहार-736101 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 09804017607
13. प्रतिमा प्रसाद, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, काज़ी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल-713340 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 09875645657
14. डॉ. श्रीनिवास यादव, असिस्टेंट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्यामा प्रसाद कॉलेज, कोलकाता-700026 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 09874489244
15. डॉ. प्रतिभा प्रसाद, असिस्टेंट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, कुल्टी कॉलेज, कुल्टी-713343 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 08250425011
16. डॉ. अभिजित सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, बानरहाट कार्तिक ओराव हिंदी गवर्नमेंट कॉलेज, माराघाट, जलपाईगुड़ी-735203 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 9831778147
17. मकेश्वर रजक, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मानकर कॉलेज, मानकर-713144 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 09332653595
18. डॉ. सत्येन्द्र पांडेय, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, बैरकपुर राष्ट्रगुरू सुरेन्द्रनाथ कॉलेज, बैरकपुर-700120 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 09832558528
19. डॉ. विजय रवानी, असिस्टेंट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, महाराजा श्रीशचन्द्र कॉलेज, कोलकाता-700003 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 08609354892
20. डॉ. विजेन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, आसनसोल गर्ल्स कॉलेज, आसनसोल-713304 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 09832129706
21. डॉ. कार्तिक चौधरी, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, महाराजा श्रीशचन्द्र कॉलेज, कोलकाता-700003 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 08240976679
22. आनंद दास, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, श्री रामकृष्ण बी.टी. कॉलेज, दार्जिलिंग-734101 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 09804551685
23. डॉ. अंजू सिंह, प्राध्यापिका (सेक्ट), हिंदी विभाग, खान्द्रा कॉलेज, खान्द्रा-713363 (पश्चिम बंगाल)। मो. - 09002811012
24. सोनी साव, प्राध्यापिका (सेक्ट), हिन्दी विभाग, पंचकोट महाविद्यालय, सरबड़ी, पुरुलिया-723121 (पश्चिम बंगाल), मो0-9933551309
25. यवनिका तिवारी, यू.जी.सी. शोध प्रज्ञ, हिंदी विभाग, कल्याणी विश्वविद्यालय, कल्याणी-741235, (पश्चिम बंगाल)। मो. - 07501680708